रूपक, गुरु नानक के कदमों की रुहानी छाप

एपिसोड २: शफ़ाफ ख़्याल (निर्मल सोच)

शफ़ाफ ख़्याल, निर्मल सोच, निडर रहमदिल की जोबनवंती उम्र जिसने अनेकता में एकता के सबक को स्पष्टता से बुलंद किया। स्पष्ट ख़्याल गुरु नानक के ताउम्र साथी रहे भाई मरदाना की विरासत की भी पड़ताल करता है।

नानक उतम नीच न कोइ ॥
(जप, गुरु नानक)

नानक ने फ़रमाया कि कोई मनुष्य ऊंचा या नीचा नहीं होता।
(जप, गुरु नानक)

गुरु नानक ने दृढ़ता से कहा कि 'सभी प्राणी समान हैं।'

गुरु नानक की बहन बेबे नानकी की शादी जय राम से हुई थी। वह काली वेईं के तट पर सुल्तानपुर लोधी में रहते थे। इस शहर की गुरु नानक की ज़िंदगी के हवाले से ऐतिहासिक अहमियत है।

मौजूदा दौर में सियासी कारणों से इंडिया-पाकिस्तान की सरहद को सिर्फ़ नामजद नाकों से ही पार किया जा सकता है। गुरु नानक की युवा ज़िंदगी की संरचना की बारीकियां समझने के लिए हम वाघा नाके से इंडिया के शहर सुल्तानपुर लोधी जा रहे हैं।

गुरु नानक के जीवन काल में सुल्तानपुर लोधी का हुक्मरान दौलत ख़ान था। उस समय हिंदू और मुसलमान समुदाय इस शहर के सामाजिक ताने-बाने का एक अभिन्न अंग थे।

गुरु नानक की दुनियादारी में उदासीनता के कारण उनके भविष्य के बारे में चिंतित बेबे नानकी और जय राम ने उन्हें सुल्तानपुर लोधी लाने पर विचार किया। उन्हें आशा थी कि जगह की बदली से गुरु नानक का मन बदलेगा। माता-पिता ने प्रस्ताव पर हामी भर दी।

हम सुल्तानपुर लोधी में उस जगह जा रहे हैं जिस बारे माना जाता है कि यह बेबे नानकी और जय राम की रिहायश थी।

जय राम सुल्तानपुर लोधी के मोदीख़ाने में अफसर के तौर पर मुलाज़मत करते थे। जय राम ने मोदीख़ाने में मुलाज़मत के लिए गुरु नानक की के लिए अर्ज़ी डाल दी।

दौलत ख़ान ने गुरु नानक को मोदी के तौर पर तैनात कर दिया। इस अहम ओहदे की ज़िम्मेदारी सरकारी माल-गोदाम की निगरानी और रोज़ाना हिसाब-किताब के बही-खाते भरना था। सुल्तानपुर लोधी की मुलाज़मत से गुरु नानक की ज़िंदगी अपने बूते पर हुई तो वह तलवंडी से माता सुलखनी को ले आये और अपना घर बसा लिया।

हम सुल्तानपुर लोधी में उस जगह जा रहे हैं जिसके बारे में माना जाता है कि इस जगह पर गुरु नानक और माता सुलखनी का घर होता था।

अमरदीप सिंह: गुरु नानक ने यहां गृहस्थ जीवन बिताया। सुल्तानपुर लोधी में गुरु नानक की रिहायश की याद में गुरुद्वारा गुरू का बाग़ सुशोभित है।

जल्दी ही उनको दो पुत्रों, श्रीचन्द और लखमी चन्द की बख़्शिश हुई। उनके त्यागी स्वभाव वाले जेठे पुत्र श्रीचन्द उदासीन संप्रदाय के सिरमौर बने, जिन्होने गुरु नानक के आलमी संदेश को दूर दराज तक पहुंचाने का काम किया। श्रीचन्द के फौत होने के बाद उदासीन संप्रदाय की गद्दी छठे गुरु, गुरु हरगोबिंद के ज्येष्ठ पुत्र बाबा गुरदित्ता को मिली। गुरु नानक के दूसरे पुत्र लखमी चन्द ने गृहस्थ जीवन का रास्ता चुना।

यहां से कुछ दूरी पर गुरुद्वारा हट्ट साहिब है जो मोदी ख़ाने वाली जगह पर बनाया गया है।

मोदीख़ाने की मुलाज़मत के दौरान गुरु नानक का वास्ता सामाजिक ज़िंदगी में पसरे भृष्टाचार से पड़ा। भृष्टाचार सामाजिक निज़ाम की जड़ों में बसा था। अपने हितों की पूर्ति के लिए अमीर, सरकार-दरबार को रिश्वत देते थे। इन हालात का फ़ायदा लेने के लिए सरकारी अमला अपनी ताकत का ग़ल्त इस्तेमाल करता था और परेशानियां कमज़ोर तबके के हिस्से आती थी। ईमानदारी को अपनाये गुरु नानक अपना काम संजीदगी से करते थे, बही-खाता ठीक रखते थे और पूरा तौलते थे। कमज़ोर लोगों को वह कुछ ज़्यादा ही दे देते थे। दिनों में ही उनका नाम चारों तरफ रोशन हो गया। आम लोग उनके साथ खुश थे। वह मेहनती, एतबार योग्य,

ईमानदार और दर्दमंद अफ़सर के तौर पर मशहूर हो गए। उनकी प्रसिद्धि से ईर्ष्या करने वाले एक मुलाज़िम ने नवाब के पास शिकायत कर दी कि गुरु नानक ग़ैर-ज़िम्मेदार अफ़सर के तौर पर सरकारी ख़ज़ाना उड़ा रहा है। नवाब दौलत ख़ान लोधी ने खाते और माल का हिसाब मिलाने का हुक्म कर दिया। जांच के बाद खाता सही पाया गया और मालख़ाने में अनाज ज़्यादा मिला जो गुरु नानक के व्यवहार को देखते हुए दानवीर शहरियों ने ज़रूरतमंद में बांटने के लिए दान किया था।

नानक आखै रे मना सुणीऐ सिख सही ॥
लेखा रब मंगेसीआ बैठा कढ वही ॥
(राग रामकली, गुरु नानक)

नानक ने कहा कि हे मन ज़मीर की आवाज़ पर कान लगा।
अंत में कर्मों से निपटारा होना है।
(राग रामकली, गुरु नानक)

गुरु नानक ने लोगों को याद करवाया कि उनको चेतना की बही में दर्ज कर्मों का लेखा देना ही पड़ता है। कुदरत के नियमों के मुताबिक झूठ का ख़ात्मा और सच का बोलबाला तय है। भ्रष्टाचार निजी लाभ के लिए अमानत में की गई खयानत है। किसी भी जमहूरी समाज का मूल ईमानदारी है जो सामाजिक-आर्थिक संतुलन और सद्भाव बनाए रखता है। इंसानी हकूक के इंकलाब का बीज गुरु नानक ने 'मोदीख़ाने' में अपने कर्मों से बोया।

अमरदीप सिंह: गुरुद्वारा हट्ट साहिब गुरु नानक की शिक्षाओं को अमली जामा पहनाने की गवाही देता है। ईमान से कमाना, दिल खोल कर देना और रूहानी सोच विचार करना।

मलसीहां गांव के मोहतबर भगीरथ गुणवान इंसान थे। जब वह मोदीख़ाने में अपनी ढाल जमा करवाने आये तो नए मोदी ने उनका दिल जीत लिया। गुरु नानक अपने काम में निपुण थे और रूहानियत के ज्ञानवान थे। गुरु नानक के साथ रूहानी गोष्ठी करने के लिए भगीरथ ने सुल्तानपुर की अपनी यात्राओं को बढ़ा दिया। भगीरथ जैसों के साथ गुरु नानक के पैरोकारों में बढ़ोतरी होनी शुरू हो गई। गुरु नानक के शोभा का असर पूरे इलाके में होने लगा।

भाई मरदाना तलवंडी में थे। गुरु नानक के इंकलाबी तेज़ के साथ उनका दिल मुलाकात के लिए व्याकुल होने लगा। सबब यह बना कि मेहता कालू ने भाई मरदाना को गुरु नानक की खबर लेने के लिए सुल्तानपुर भेजा।

सुल्तानपुर में भाई मरदाना ने गुरु नानक के घर आगमन किया। प्रतिदिन वेईं नदी में स्नान करके रूहानी बाणी का गायन भाई मरदाना और गुरु नानक का नेम था। एक दिन भाई मरदाना ने अपनी बेटी के विवाह में धन की कमी का जिक्र किया। भाई मरदाने की मुश्किल सुनकर गुरु नानक ने भगीरथ को मदद करने की विनती की। व्यवस्था करने के लिए भगीरथ लाहौर गए जहां उनकी मुलाकात शहर के नामी व्यापारी मनसुख से हुई। गुरु नानक के इंकलाबी ख़्यालों के बारे सुनकर मनसुख भी भगीरथ के साथ सुल्तानपुर के रास्ते पर चल पड़े। गुरु नानक से मिलकर मनसुख खुश हो गया और उनके प्रारंभिक अनुयायियों में शामिल हो गया। शादी का साज़ो-सामान ले कर भाई मरदाना तलवंडी की ओर चल पड़े। अपनी बेटी की शादी सम्पूर्ण करने के बाद वह गुरु नानक का साथ निभाने के लिए सुल्तानपुर लोधी वापिस लौट आए।

हम अब वेईं नदी के किनारे बने गुरुद्वारा बेर साहिब जा रहे हैं। इस गुरूद्वारे का सुल्तानपुर लोधी में अहम स्थान है। इस जगह का शांत प्राकृतिक नज़ारा अनोखा था। इसलिए गुरु नानक प्रतिदिन यहां स्नान और ध्यान करते थे।

स्वयं भृमण किये बग़ैर किसी को सच की प्राप्ति कैसे हो सकती है?

गुर का सबद रतंन है कर चानण आप दिखाइआ ॥
(राग मलार, गुरु नानक)

रूहानी ज्ञान वह रत्न है जिससे मनुष्य की हस्ती रोशन होती है।
(राग मलार, गुरु नानक)

मैं अक्सर सोचता हूँ कि संगठित धर्मों के घेरे में प्रचारकों की कोई कमी नहीं है लेकिन उनमें से कितने लोगों ने उस सत्य को महसूस किया है जिसका ज़िक्र गुरु नानक ने किया है?

अमरदीप सिंह: गुरुद्वारा बेर साहिब गुरु नानक के वेईं किनारे गुज़ारे हुए समय की नुमाइंदगी करता है। यहाँ उन्होंने ध्यान लगाया और अल्ला दित्ता नामक मुसलमान फ़कीर के साथ रूहानी गोष्ट रचाया।

पुराने समय से संत-महात्मा कहते आए हैं कि निरंकार का कायनात के कण-कण में वास है। क्या तीर्थ स्थान जिज्ञासु मन को सुकून पहुंचाते हैं?

पूज सिला तीरथ बन वासा ॥
भरमत डोलत भए उदासा ॥
मन मैलै सूचा किउ होइ ॥
साच मिलै पावै पत सोइ ॥
(राग धनासरी, गुरु नानक)

मनुख पत्थर पूजता है, ज़िआरत करता है और जंगलों में वास करता है।
भटकने और आवागमन के चक्कर में त्यागी हो जाता है।
मलिन मन कैसे पाक हो सकता है?
सच की प्राप्ति मनुष्य को ईमानदार बनाती है।
(राग धनासरी, गुरु नानक)

गुरु नानक का संदेश इस अहमियत पर जोर देता है कि नेक इरादों के साथ ही दिलासा मिलता है। मैं हैरान हूँ कि हम अभी भी कर्मकांड की हिमायत करते हैं और गुरु नानक के विवेक के मूल तत समझने में समर्थ नहीं हुए।

एकांत में सोच-विचार करने के लिए गुरु नानक वेईं के दूसरे किनारे कब्रिस्तान में जाते थे।

गुरु नानक के ससुर साहिब मूला खत्री अपने साथ सामा पंडित को लेकर कब्रिस्तान गए ताकि उनके अकेलेपन का पता लगाया जा सके। जब उन्हें गुरु नानक के मन की iáQqI का पता नहीं चला, तो मूला खत्री उन्हें बुरी आत्माओं के चंगुल से मुक्त करने के लिए फ़कीरों के पास पहुंचे।

गुरु नानक ने एक दिन वेईं नदी में स्नान करने के लिए डुबकी लगाई और वापस नहीं आए। मौके पर मौजूद लोगों ने यह सोच कर हाय-तौबा मचाना शुरू कर दिया कि गुरु नानक डूब गए हैं। उनको ढूंढने के लिए नवाब दौलत ख़ान लोधी ने हर उपाय किया परन्तु कुछ हासिल नहीं हुआ। एक विचार यह है कि दूसरी तरफ घने जंगल में अकेले ध्यान लगाने के लिए गुरु नानक ने वेईं पार की हो। तीन दिन बाद उन्हें पूर्व की तरफ तीन किलोमीटर दूर वेईं में से निकलते हुए देखा गया।

गुरुद्वारा संत घाट गुरु नानक के वेईं में से वापिस प्रकट होने की याद में बनाया गया है।

अमरदीप सिंह: गुरु नानक ने वेईं के किनारे ध्यान और सोच विचार करने के बाद वहदत के रूहानी शब्दों का उच्चारण किया।

अपने इस रहस्यमय तजुर्बे के साथ गुरु नानक को वज़ाहत का आशीर्वाद मिला, जिसे वह पूरी मानव जाति में बाँटना चाहते थे।

एको धरम द्रड़ै सचु कोई ॥
(राग बसंत, गुरु नानक)

नेकी ही एकमात्र धर्म है जो आलमी कायदा है।
(राग बसंत, गुरु नानक)

गुरु नानक पर विरह की खुमारी छाई हुई थी। हाज़रा-हज़ूर के साथ विस्मादी जुड़ाव और सुरत को संभालते हुए उन्हें पूरी कायनात में अच्छाई ही नज़र आती थी।

जब गुरु नानक ने सांसारिक मोह-माया से बंधन तोड़ा, तो लोगों को लगा कि उनकी सुध-बुध गायब हो गई है ।

कोई आखै भूतना को कहै बेताला ॥
कोई आखै आदमी नानक वेचारा ॥१॥
भइआ दिवाना साह का नानक बउराना ॥
हउ हरि बिनु अवरु न जाना ॥
(राग मारू, गुरु नानक)

कोई भूत कहे और कोई बेताल।
कोई मेरे को बेचारा आदमी कहे।
हाज़रा-हज़ूर के पीछे नानक बावरा हो गया है।

इसके बिना वह कुछ नहीं जानता।
(राग मारू, गुरु नानक)

गुरु नानक ने फरमाया है कि नेकी का रास्ता ही सबसे उत्तम मज़हब है। उन्होंने निडरता से एलान किया कि 'सभी मनुष्य बराबर हैं'। रूहानियत के रास्ते पर कट्टरता और किसी मज़हब, जाति, रंग, या लिंग की उच्चता की गुंजाइश नहीं है।

इससे प्रचलित मज़हबी मान्यताओं के रक्षकों को तकलीफ़ हुई। उनका गुस्सा शिकायत के तौर पर नवाब दौलत ख़ान लोधी के पास दर्ज हुआ। गुरु नानक को अपने कहे हुए की सफ़ाई देने के लिए बुलाया गया। गुरु नानक से सवाल पूछने पर शिकायत की पैरवी करने के लिए काज़ी भी मौके पर मौजूद था। उन्होंने सवाल किया कि अगर नेकी ही सबसे आदरणीय मज़हब है तो उन मान्यताओं का क्या महत्व है जिन्हें स्थापित करने की कोशिश में पैगंबरों, पीरों, संतों और फ़कीरों ने सदियों से प्रयास किया है? गुरु नानक ने उत्तर दिया कि धार्मिक व्यक्ति वही है जो मज़हब की रूह को पहचानता है और उसके तत्व पर अमल करता है ।

गुरु नानक से काज़ी ने पूछा कि हर मनुष्य मज़हब का कोई रास्ता चुनता है, उनका रास्ता कौन सा है?

गुरु नानक ने जवाब दिया कि वह आलमी मैत्री चाहते हैं और उस रास्ते के मुसाफ़िर हैं जो दिव्य चेतना की तरफ जाता है। निरंकार के लिए कोई अजनबी नहीं है और ना ही उसका कोई मज़हब है। इस जवाब से उतावले हुए काज़ी ने कहा कि अगर उनका रास्ता इलाही है तो फिर नमाज़ अदा करें। गुरु नानक ने सहमति जताई और उनके साथ मस्जिद की ओर चले गए।

हम अब गुरुद्वारा अंतरयामता साहिब जा रहे हैं। यह गुरुद्वारा नमाज़ वाली साखी की याद में ही बना हुआ है।

जब काज़ी नमाज़ पढ़ रहा था तब गुरु नानक उनको देखकर मुस्कुरा रहे थे। गुस्से में आये काज़ी ने उनकी मुस्कुराहट का कारण पूछा। गुरु नानक ने जवाब दिया कि काज़ी ईमानदारी से नमाज़ नहीं पढ़ रहे थे हालाँकि वह आप शारीरिक तौर पर मस्जिद में थे परन्तु आपका ध्यान घर पर नई जन्मी बछड़ी पर था।

मज़हबी वस्त्र ग्रहण करना और रीति-रिवाज़ निभाना आसान है परन्तु असल परीक्षा तो रूहानी रहबरों के बताए रास्ते पर चलना है। एक पंथ का सच्चा अनुयायी एक दयालु और विनम्र व्यक्ति होता है जो पूर्ण विश्वास से भर जाता है। इसके बग़ैर तो प्रतिदिन पूजा, रीति-रिवाज़ और मज़हबी वस्त्र महज एक पाखंड है।

हमारी इच्छा तो अच्छाई करना है परन्तु हमारी इस इच्छा का रास्ता कौन रोकता है?

मन भूलउ भरमस आइ जाइ ॥
अत लुबध लुभानउ बिखम माइ ॥
(राग बसंत, गुरु नानक)

हमारा मन बंधन और मुक्त होने के बीच में बेवजह भटकता है।
व्यर्थ के भ्रम से बेपनाह लोभ उत्पन्न होता है।
(राग बसंत, गुरु नानक)

नफ़्सी बहक के मंत्र से मन धोखेबाज हो जाता है। माया के जाल में फंसकर मनुष्य बंधन और मुक्त होने के भंवर में फंस जाता है और उसकी वास्तविक इच्छा पर रोक लग जाती है।

उन्नीस सौ सैंतालिस के बंटवारे के बाद आबादी का मज़हब आधारित तबादला हुआ। नतीजा यह रहा कि सुल्तानपुर लोधी इस समय सिख और हिन्दू की ज़्यादा जनसंख्या वाला शहर है जहां चंद मुसलमान परिवार ही रहते हैं। पुराने किले में मौजूद ऐतिहासिक मस्जिद अभी भी मज़हबी प्यार की सुंदर मिसाल पेश करती है। इसी इमारत में शहर के मुसलमानों ने गुरु नानक के शब्द वाले ग्रन्थ सम्भाल रखे हैं जिनमें निरंकार के सन्देश वाली यादें दर्ज हैं।

आख़िर, गुरु नानक ने मज़हबी, सामाजिक और सभ्यता को संजोए रखने वाले स्थलों का सफ़र करने का फ़ैसला कर लिया।

उन्होंने भाई मरदाना से रूहानी जुड़ाव में शामिल होने का अनुरोध किया। दोनों को इस बात का अहसास हुआ कि इस सफ़र में रबाब का साथ होना ज़रूरी है। यह तार वाला वाद्य यंत्र राग के साथ-साथ लय भी देता है। रबाब, रूहानी यात्रियों की साथी बन गई। रूहानी संगीत में बंधे शब्द मन की सीमाओं को पार कर जाते हैं।

अमरदीप सिंह: उदासीआं शुरू करने से पहले, गुरु नानक ने भाई मरदाना से एक रबाब निर्माता, भाई फिरंदा से साज खरीदने का अनुरोध किया।

हम अब सुल्तानपुर लोधी से भरौणा गांव जा रहे हैं जहां काली वेईं ब्यास दरिया में मिलती है।

अमरदीप सिंह: यह गुरुद्वारा भाई फिरंदा की यादगार के तौर पर बना हुआ है जिन्होंने भाई मरदाने को उपहार के तौर पर रबाब दी थी।

भाई मरदाना ने रबाब पसंद कर लिया। भाई फिरंदा अपने हाथों से गुरु नानक को रबाब भेंट करने के लिए सुल्तानपुर लोधी पहुंचे।

विसमाद में आये गुरु नानक ने गायन किया,

हउ ढाढी वेकार कारै लाइआ ॥
राति दिहै कै वार धुरह फुरमाइआ ॥
ढाढी सचै महल खसम बुलाइआ ॥
सची सिफत सालाह कपड़ा पाइआ ॥
सचा अंमृत नाम भोजन आइआ ॥
गुरमती खाधा रज तिन सुख पाइआ ॥
(राग माझ, गुरु नानक)

मेरे जैसे बेरोज़गार शायर को सेवा लगी है।
दिन-रात उसी के महिमा गायन की।
शायर को सच्चे पातशाह ने बुलाया है
और सच्ची आराधना का मान बख़्शा है।
सोच-विचार का अमृत ही मेरी ख़ुराक़ हो गया।
रूहानी मुसाफ़िरों को चैन और सुकून नसीब होता है।
(राग माझ, गुरु नानक)

गुरु नानक ने विनम्रतापूर्वक समझ लिया कि वह अगले अभियान के लिए तैयार हैं। भाई मरदाना भी अपने पिता वाले कर्तव्यों का पालन कर, गुरु नानक के साथी बनने के लिए तैयार थे।

भाई गुरदास ने दर्ज किया है:

इक बाबा अकाल रूप दूजा रबाबी मरदाना ॥
(भाई गुरदास)

एक अकाल रूपी बाबा (गुरु नानक) और दूसरा रबाबी मरदाना।
(भाई गुरदास)

ऐतिहासिक तौर पर जिन मुसलमान गायकों ने गुरबाणी का गायन किया वह रबाबी कहलवाए। उन्होंने सदियों तक गुरुद्वारों में रूहानी शबद गाये।

उन्नीस सौ सैंतालीस के विभाजन ने एक देश को दो सम्प्रभु राज्यों, इंडिया और पाकिस्तान में विभाजित कर दिया। बंटवारा धर्मों के आधार पर हुआ। इस दुर्भाग्यपूर्ण घटना ने ना केवल क्षेत्र को विभाजित किया बल्कि रबाबियों की परंपरा सहित आम सांस्कृतिक पहलुओं पर भी हानिकारक प्रभाव डाला।

वर्तमान समय में सियासी कारणों से इंडिया-पाकिस्तान की सरहद कुछ तय नाकों से ही पार की जा सकती है। हम गुरु नानक के पदचिन्हों से कुछ घुमाव लेकर वाघा नाके से पाकिस्तान मे लाहौर जा रहे हैं तांकि उन बिंदुओं से जुड़ा जा सके जो इस विरासत को जीवित रख रहे हैं।

हम लाहौर में मोहल्ला हुसैनपुरा जा रहे हैं जहां मुहम्मद हुसैन लाल, नईम ताहिर लाल और सरफ़राज़ हुसैन लाल जैसे रबाबियों का परिवार रहता है। इनका दावा है कि यह भाई मरदाना के वंश की अठारवी और उन्नीसवीं पीढ़ी हैं[

जाहर पीर जगत गुर बाबा ॥
(भाई गुरदास)

बाबा (गुरु नानक) रूहानी रहबर के तौर पर दुनिया में ज़ाहिर हुए।
(भाई गुरदास)

नईम ताहिर: आओ आओ वीर जी। सति श्री अकाल, महाराज।

अमरदीप सिंह: सलाम जी सलाम। क्या हाल है? ठीक हो जी?

नईम ताहिर: वाहेगुरु जी का खालसा। वाहेगुरु जी की फतेह।

अमरदीप सिंह: बहुत अच्छा लगा आपसे मिलकर। मेरे को थोड़ा सा अपने परिवार के बारे में बताएं, उन्नीस सौ सैतालिस से पहले क्या माहौल था? आज क्या माहौल है? इस बारे थोड़ा सा बताएं?

नईम ताहिर: विभाजन से पहले, भाई मरदाने के वंश में से श्री हरिमन्दिर साहिब, गोल्डन टेम्पल में, बारह जोड़ियां कीर्तन करती थी। अलग-अलग गुरुद्वारों में रबाबी ख़ानदान हज़ूरी रागी के तौर पर अपनी ज़िम्मेदारियों को निभाते थे। गोविंदवाल साहिब भाई लाल जी का जन्म हुआ। सबसे बड़े ताऊ जी सीसगंज गुरुद्वारे में हज़ूरी रागी थे। हमारे दादा जी और नाना जी, भाई चिरागदीन, गोइंदवाल साहिब में हज़ूरी रागी थे। जब विभाजन हुआ तो कीर्तन का सिलसिला बिल्कुल ख़त्म हो गया। यहां आ कर मुश्किल तो हुई परन्तु आशिक अली भाई लाल जी अनूठे व्यक्तित्व थे, मेरे पिता जी, जिन्होंने कव्वाली शुरू कर दी। उन्नीसवीं पीढ़ी आ गई है। सभी मेहनत मज़दूरी करते हैं। जब मेले लगते हैं, जब संगत आती है तब हम कीर्तन करते हैं। हमारी पूरी कोशिश हैं कि हम इसे छोड़े ना। गुरु नानक इसे आगे तक ले जाने में मदद करें।

गंग बनारस हिंदूआ मुसलमाणाँ मका काबा।
घर घर बाबा गावीऐ वजन ताल मृदंग रबाबा।
जाहर पीर जगत गुर बाबा ॥
(भाई गुरदास)

हिंदू बनारस में गंगा में आस्था रखते हैं। मुसलमान मक्के में काबा में आस्था रखते हैं।
अब बाबे (गुरु नानक) का एकता वाला आलमी संदेश घर-घर में गाया जाता है। ढोल और रबाब की संगत में।
बाबा (गुरु नानक) रूहानी रहबर के तौर पर दुनिया में ज़ाहिर हुए।
(भाई गुरदास)

इस मुलाकात में रबाबी परम्परा को संभालने वालों की आस-औलाद की मौजूदा हालात देख करके मेरा मन उदास हो गया। इनके पूर्वज गुरु नानक और भाई मरदाने की विरासत को शान से संभालते हुए आये हैं।

लाहौर में गुरु नानक की शिक्षा को आगे ले जाने वाली शख़्सियतें हैं। हम ओरिएंटल कॉलेज में पढ़ाने वाली डॉ असमा कादरी को मिलने जा रहे हैं।

डॉ असमा कादरी: आओ जी।
अमरदीप सिंह: सलाम, असमा जी।
डॉ असमा कादरी: सति श्री अकाल जी, क्या हालचाल है?
अमरदीप सिंह: सलाम और सति श्री अकाल जी। कैसी हैं आप?
डॉ असमा कादरी: बिल्कुल ठीक।
अमरदीप सिंह: बहुत बहुत धन्यवाद। अपने हमारे लिए समय निकाला।
डॉ असमा कादरी: कोई बात नहीं। आप स्वयं ही समय अपने साथ लिए घूम रहे हैं। जो आपने काम शुरू किया हुआ है, वह तो सभी को समय से बाहर कर देते हैं। आपके आने से पहले ही यह नई किताब आई है, 'गावन संग'। जब इसे खोला तो नानक का वचन सामने आता है, ठीक उसी समय आप आ पहुंच गए।

जउ तउ प्रेम खेलण का चाउ ॥
सिर धर तली गली मेरी आउ ॥
इत मारग पैर धरीजै ॥
सिर दीजै काण न कीजै ॥
(गुरु नानक)

अगर तुम प्यार का खेल खेलना चाहते हो
तो अपना सिर हथेली पर रखकर।
इस रास्ते पर कदम आगे बढ़ाओ।
अगर इस रास्ते पर कदम आगे बढ़ाया है
तो फिर अहंकार को त्यागने में झिझक महसूस मत करना।
(गुरु नानक)

अमरदीप सिंह: असमा जी, मैं जानने के लिए उत्सुक हूँ कि आपका गुरु नानक के साथ क्या रिश्ता है?

डॉ असमा कादरी: हमारी शास्त्रीय शायरी बाबा फ़रीद से शुरू होती है, सुल्तान बाहू, सचल सरमस्त, शाह हुसैन, बुल्ले शाह, वारिस शाह, दामोदर, मियां मुहम्मद बख़्स, मौलवी गुलाम रसूल आलम पुरी - यह सभी के सभी शायर हम नजम साहिब के साथ संगत में पढ़ रहे हैं, पिछले चालीस पैंतालीस साल से यह सिलसिला प्रत्येक सप्ताह चल रहा है। वहीं ग्रन्थ साहिब को पढ़ कर हमारे अंदर एक समझ बननी शुरू हुई है। बाबा नानक के पीछे बाबा फ़रीद की परंपरा मौजूद है। नानक के साथ हमारे शायरों का जुड़ाव क्या था, यह आपके लिए हैरानी की बात होगी। हमारे सिंध का एक शायर था, सच्चल। उसके पास एक नया शायर, यूसुफ़ आया। सच्चल ने उसकी शायरी पढ़ी और उसको कहा कि अब तेरा नाम नानक यूसुफ़ है। सिंध में नानक यूसुफ़ नाम का एक शायर है। उसे हमने नजम साहिब के साथ ही संगत में पढ़ा। जो नजम हुसैन सैय्यद की संगत है, उस में अब हमने कोई चौथी बार ग्रन्थ साहिब को पढ़ना शुरू किया है। हमारे पास आज भी, इस समय भी, यहां लाहौर के अंदर, यह सब कुछ चल रहा है। नानक जिंदा हैं। मौजूद हैं। जो उन्होंने बीज बिखेरे, देखो वह अब पौधा बन रहे हैं। हर बीज के अंदर दो हिस्से होते हैं परन्तु उनमें से पौधा एक ही निकलता है। यही सबद बानी है जो नानक ने बीजों की तरह बिखेर रखी है।

Amardeep Singh: बेशक सत्तर साल के बंटवारे के बाद हमारी काफी कुछ विरासत गुम हो गई है, परन्तु लाहौर के अंदर वो श्रंखलाएं अभी भी मौजूद हैं। जिन्हें देखकर बहुत खुशी होती है। बाबा आज भी यहां मौजूद है। उनको आपने सम्भाल कर रखा हुआ है।

रुहानियत का क्षेत्र संगठित मतों के दायरों से परे है। इसकी सही व्याख्या तो विभिन्न दर्शनों के खुले दिल से किये अध्ययन द्वारा की जा सकती है।

सो किउ विसरै मेरी माइ ॥
(राग आसा, गुरु नानक)

ओ मेरे मन क्यों भूला है?
(राग आसा, गुरु नानक)

सलीमा ख़्वाज़ा पेशे से वकील हैं परन्तु उनकी आत्मा गुरु नानक kyy दर्शन के साथ जुडी हुई हैं। भाई चाँद दरबार साहिब अमृतसर में कीर्तन करने वाले आख़िरी रबाबीयों में से एक थे। भाई चाँद के सुपुत्र भाई ग़ुलाम मुहम्मद चाँद से कीर्तन सुनकर सलीमा ख़्वाज़ा की गुरबाणी के साथ रूबरू हुई।

आखा जीवा विसरै मर जाउ ॥
आखण अउखा साचा नाउ ॥
(राग आसा, गुरु नानक)

मैं सोच-विचार में ज़िंदा हूँ और भूल जाते ही मर जाता हूँ।
सच्ची सोच-विचार मुश्किल है।
(राग आसा, गुरु नानक)

सलीमा ख़्वाजा: शुरुआत कुछ ऐसी हुई थी[भाई चाँद से मेरी मुलाकात हुई[वह हमारे घर आये और उन्होंने सबद गायन किया[उनके गायन में एक अजीब सी कशिश थी जिससे मेरे को अंदाज़ा हुआ कि बाबा नानक के कलाम का दायरा बहुत विशाल है। मैंने दो हज़ार सात में उनसे सीखना शुरू किया। भाई चाँद उस परंपरा के वाहक थे और उन्होंने इसे अपने बज़ुर्गों से सीखा था। यह परंपरा धीरे-धीरे मेरे तक पहुंची है। मैं भाग्यशाली हूँ।

गली जोग न होई ॥
एक द्रसट कर समसर जाणै जोगी कहीऐ सोई ॥
(राग सूही, गुरु नानक)

बातों से ज़िंदगी की राह नहीं मिलती।
जो सभी मनुष्यों को एक मानता है सिर्फ़ वही ज़िंदगी का राज़ समझ सकता है।
(राग सूही, गुरु नानक)

मुझे एक जापानी दार्शनिक का कथन याद आ रहा है कि किसी समझदार का अनुयायी हो जाने से कोई समझदार नहीं हो जाता परन्तु उनके बताये रास्तों पर चल कर हुआ जा सकता है।

पाकिस्तान के लाहौर से वाघा नाके के रास्ते इंडिया-पकिस्तान दी सहरद पार करके हम सुल्तानपुर लोधी से गुरु नानक के पदचिन्हों पर आगे बढ़ेंगे। इस सफ़र के दौरान मैं संगत के मायने के बारे में सोच रहा हूँ। असल में यही सच्चा अमल है जो लाहौर के कुछ लोग मज़हब की हदों से पार जा करके लगातार निभा रहे हैं।

साहिब मेरा एको है ॥
एको है भाई एको है ॥
(राग आसा, गुरु नानक)

मेरा साहिब एक ही है।
भाई! वह एक ही है।
(राग आसा, गुरु नानक)

चर्चा के लिए कुछ संकेतक

रूपक, गुरु नानक के कदमों की रुहानी छाप

एपिसोड २: शफ़ाफ ख़्याल (निर्मल सोच)

ये चर्चा संकेतक गुरु नानक के जीवन और उनकी रुहानियत से जुड़े समृद्ध ऐतिहासिक और दार्शनिक पहलुओं को खोजने के मार्ग प्रदान करते हैं। इन प्रश्नों का उद्देश्य उनके जीवन को आकार देने वाले ऐतिहासिक संदर्भ और सुल्तानपुर लोधी में उनके अनुभवों से उत्पन्न होने वाली दार्शनिक अंतर्दृष्टियों को गहराई से समझने के लिए प्रेरित करना है।

ऐतिहासिक चर्चा संकेतक:

१. **गुरु नानक के प्रारंभिक वर्षों में सुल्तानपुर लोधी का क्या महत्व था?**
इस एपिसोड से पता चलता है कि सुल्तानपुर लोधी ने गुरु नानक के प्रारंभिक वयस्क जीवन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। यहीं पर गवर्नर दौलत खान लोधी ने उन्हें राज्य भंडारगृह (मोदीखाना) का 'मोदी' (अधिक्षक) नियुक्त किया था। काली बेईं नदी के पूर्वी तट पर स्थित इस शहर में उन्होंने अपने पारिवारिक जीवन की शुरुआत की, दो पुत्रों (श्री चंद और लखमी चंद) के पिता बने, और एक ईमानदार एवं करुणामयी अधिकारी के रूप में पहचाने गए। विविध सांस्कृतिक पृष्ठभूमि वाले इस शहरी वातावरण ने उनकी जीवन-दृष्टि को कैसे आकार दिया होगा?

२. **गुरु नानक की सरकारी पद पर कार्यशैली उनके आध्यात्मिक मूल्यों को कैसे प्रतिबिंबित करती थी?**
राज्य के भंडारगृह के अधीक्षक के रूप में गुरु नानक ने एक भ्रष्ट प्रणाली में भी अपनी ईमानदारी बनाए रखी। इस एपिसोड के अनुसार, गुरु नानक सत्यनिष्ठा के अनुयायी थे और पूरी निष्ठा से अपने कर्तव्यों का निर्वहन करते थे। वे जरूरतमंदों को अनाज की अतिरिक्त मात्रा वितरित करते थे। जब उन पर कुप्रबंधन का आरोप लगा, तो जांच में उनके खातों को सही पाया गया और अनाज की मात्रा भी अधिक पाई गई। यह व्यावहारिक नैतिकता उनके क्रांतिकारी संदेशों की नींव को कैसे दर्शाती है?

३. **गुरु नानक का काली बेईं नदी में तीन दिवसीय गुमशुदगी का क्या महत्व था?**
इस एपिसोड में उनके एक महत्वपूर्ण रहस्यमयी अनुभव का वर्णन किया गया है: एक सुबह जब वे काली बेईं नदी में स्नान करने गए, तो वे तीन दिनों तक बाहर नहीं आए। तीन दिन बाद वे नदी से लगभग ३

किलोमीटर दूर बाहर प्रकट हुए। इस अनुभव के बाद, उन्हें दिव्य बोध प्राप्त हुआ, जिसे वे सबके साथ साझा करना चाहते थे। यह रूपांतरणकारी अनुभव उनके जीवन के सार को लेकर उनकी गहरी समझ को कैसे प्रकट करता है?

४. **लोग गुरु नानक के जीवन दृष्टिकोण से कैसे प्रभावित हुए, और इससे उनकी विचारधारा के प्रभाव के बारे में क्या पता चलता है?**

इस एपिसोड में कुछ प्रारंभिक अनुयायियों का उल्लेख है: मालसिहान गांव के मुखिया भगीरथ, जो नए 'मोदी' से प्रभावित हुए; भाई मर्दाना, जो तलवंडी से गुरु नानक से मिलने आए; और शहर के प्रसिद्ध व्यापारी मनसुख, जो गुरु नानक के क्रांतिकारी विचारों और कार्यों को सुनकर उनके अनुयायी बन गए। इन अनुयायियों की विविध पृष्ठभूमि गुरु नानक के प्रभाव के बारे में क्या इंगित करती है?

५. **गुरु नानक ने धार्मिक अधिकारियों की चुनौतियों का कैसे सामना किया?**

जब काजी ने उनके कथनों पर आपत्ति जताई और दौलत खान लोधी के सामने पेश किया, तो गुरु नानक ने उत्तर दिया कि सबसे सम्मानजनक धर्म सच्चाई और धार्मिकता का पालन करना है। जब उन्हें मुस्लिम प्रार्थना में शामिल होने के लिए आमंत्रित किया गया, तो उन्होंने काजी की ध्यान भटकने वाली मानसिकता को उजागर किया। इन घटनाओं से स्थापित धार्मिक परंपराओं को चुनौती देने में गुरु नानक की अनोखी दृष्टि कैसे झलकती है?

६. **भाई मर्दाना और रबाबी परंपरा की विरासत का क्या महत्व रहा है?**

इस एपिसोड में भाई मर्दाना की पृष्ठभूमि का वर्णन किया गया है, जो गुरु नानक के आध्यात्मिक साथी थे और अपने रबाब (संगीत वाद्ययंत्र) के साथ उनका साथ निभाते थे। उनके वंशजों ने 'रबाबी' नामक एक परंपरा विकसित की, जिसमें मुस्लिम संगीतकार गुरु ग्रंथ साहिब की वाणियों का गायन करते थे। १९४७ के विभाजन ने इस परंपरा को गहरा आघात पहुंचाया, लेकिन लाहौर में भाई मर्दाना के वंशज आज भी इस विरासत को जीवित रखने का प्रयास कर रहे हैं। यह संगीत परंपरा गुरु नानक के संदेश के अंतरधार्मिक पहलू को कैसे दर्शाती है?

दार्शनिक चर्चा संकेतक:

१. गुरु नानक की समानता की घोषणा सामाजिक पदानुक्रम को कैसे चुनौती देती है?

इस एपिसोड में गुरु नानक का कथन उद्धृत किया गया है: कोई उच्च नहीं, कोई निम्न नहीं। उन्होंने यह घोषणा की कि सभी समान हैं और धर्म, जाति, रंग और लिंग पर आधारित भेदभाव को खारिज किया। सामाजिक रूप से विभाजित समाज में यह विचार कितना क्रांतिकारी था?

२. गुरु नानक ईमानदारी और रुहानियत के बीच क्या संबंध बताते हैं?

गुरु नानक कहते हैं: अंतरात्मा के सच्चे निर्देशों को सुनो। उन्होंने यह भी कहा कि व्यक्ति के कर्मों का हिसाब उसकी आत्मा के द्वारा लिया जाता है। यह सबद नैतिक आचरण को आध्यात्मिक जागरूकता से कैसे जोड़ती है?

३. गुरु नानक धार्मिक अनुष्ठानों से परे सच्चे धर्म को कैसे परिभाषित करते हैं?

जब काजी ने उनसे प्रश्न किया, तो गुरु नानक ने उत्तर दिया कि सत्य और धार्मिकता ही एकमात्र सार्वभौमिक नियम हैं। उन्होंने कहा कि वे उसी मार्ग पर चलते हैं जो दिव्य चेतना की ओर ले जाता है, जो किसी को पराया नहीं मानती और किसी विशेष धर्म से बंधी नहीं होती। यह विचार पारंपरिक धार्मिक सीमाओं के लिए क्या संकेत देता है?

४. गुरु नानक आध्यात्मिक खोज में मन की चुनौतियों का वर्णन कैसे करते हैं?

गुरु नानक स्वीकार करते हैं कि मन मोह और वैराग्य के बीच संशय में रहता है। यह प्रलोभनों से अत्यधिक आकर्षित होता है। मानव मनोविज्ञान की इस समझ से उनकी आध्यात्मिक अंतर्दृष्टियां कैसे प्रभावित होती हैं?

५. गुरु नानक के आध्यात्मिक दृष्टिकोण में 'एकत्व' का क्या महत्व है?

इस एपिसोड में गुरु नानक का यह कथन आता है: मेरा स्वामी एक है, वह केवल एक है। पूरे एपिसोड में उनके संदेश और दर्शन में 'एकत्व' की अवधारणा दोहराई जाती है। यह एकता की धारणा केवल ईश्वर की एकता से आगे बढ़कर सामाजिक और आध्यात्मिक एकता तक कैसे विस्तारित होती है?

६. गुरु नानक के आत्म-प्रकाश की अवधारणा उनके सत्य के दृष्टिकोण से कैसे संबंधित है?

गुरु नानक कहते हैं कि आध्यात्मिक ज्ञान ही वह रत्न है जिससे आत्मा प्रकाशित होती है। यह संदर्भ इस बात की खोज से जुड़ा है कि बिना भौतिक रूप से भटकते हुए सत्य को कैसे पाया जाए। यह गुरु नानक के आंतरिक बनाम बाह्य स्रोतों के प्रति दृष्टिकोण को कैसे दर्शाता है?